

असाधारण EXTRAORDINARY

HT II—GUE 3—EU-GUE (ii)
PART II—Section 3—Sub-section (ii)

माधिकार से मकाशित PUBLISHED BY AUTHORITY

• 579] No. 579] नई दिल्ली, बृहस्पितःचार, दिसम्बर, 5, 1985/अग्रहायण 14, 1907

NEW DELHI, THURSDAY, DECEMBER 5, 1985/AGRAHAYANA 14, 1907

इस भाग में भिन्न पृष्ठ संख्या दी जाती हैं जिससे कि यह अभग संकलन के रूप में रखा का सके

Separate Paging is given to this Part in order that it may be filed as a separate compilation

परिवटन मंत्र लिय

(रेल विभाग)

(रेलचे बोई)

नई दिल्ली, 5 दिसम्बर 1995

ग्रधिस्चना

का.ग्रा. 881(ग्र).—केन्द्रीय मरकार, भारतीय रेल ग्रधिनियम 1890 (1890 का 9) की धारा 47 की उपधारा (1) के खंड (छ) द्वारा प्रयत्त शक्तियों का प्रयोग करते हुए, निम्नलिखित नियम बनाती है, ग्रधीत .—

- 1. मंक्षिण्त नाम और प्रारम्भ (1) इन नियमों का मंक्षिण्त नाम रेल याजी नेवा ग्रमिकती प्राधिकरण नियम. 1985 है।
 - (2) ये राजपव में प्रकाशन की नारीख को प्रवृत्त होंगे।
- 2 परिभाषाणं: इन नियमो में. जब तक कि संदर्भ में अन्यथा अपेक्षित न हों; --
 - (क) 'ग्रामिकर्ता' से नियम 4 के श्रधीन रेल यास्त्री सेवा अभिकर्ता के रूप में बार्य करने के लिए प्राधिकृत किया गया व्यक्ति अभिप्रेत हैं और इसके अंतर्गत ऐसे व्यक्ति का वह कर्मचारी भी है जिसे नियम 5(viii) के श्रधीन पहचान पद्म दिया गया है,

- (ख) 'अनुज्ञाप्ति' में नियम 4 के अधीन दी गई अनुज्ञाप्त अभिज्ञेत है,
- (ग) "सक्षम प्राधिकारी" से क्षेत्रीय रेल का महाप्रबन्धक या इन नियमों के अधीन उसके कृत्यों का निर्वहन करने के लिए उसके द्वारा प्राधिकृत किया गया कोई अधिकारी अभिप्रेन है और
- (घ) 'स्टेशन' से वह क्षेत्र प्रभिन्नेत है जिसके भीतर मुख्य रेल स्टेशन ओर उस रेल से संबंधित प्रारक्षण बुकिंग कार्यालय प्रवस्थित है, जैंगे, उत्तर रेलवे के लिए नई दिल्ली और पुरानी दिल्ली के सम्मिलित क्षेत्र, पूर्व ओर दक्षिण पूर्व रेलों के लिए सिय। लदह और हावड़ा, पश्चिम और मध्य रेल के लिए मुम्बई और दक्षिण रेल के लिए महाम ।
 - 3 अभिकर्ता की नियुक्ति के लिए शर्ने (1) कोई व्यक्ति-
 - (1) जिसके पास नवीतनम ग्राय-कर समाणोधन प्रमाण पह है,
 - (2) जिसके पास नगर मे उचित रूप से ग्रनुरक्षित कार्यालय ओर परिसर तथा ऐसे पर्याप्त सावन और सुविधाएं है जिसमे

ग्राने वाले ग्राह्वो की पर्याप्त सक्या को स्थान मिल सके. और

(3) जिसे विसी ऐसे दांटिव सक्ताम इन्य सिक्ट तर्हा पाया गया है जिसमें नैतिक अवस्ता राक्षित है

श्रमिकर्ता के रूप में कार्य करने के लिए नियम । ने शर्धन आर्जानि दिए जाने के लिए आवेदन कर समता ह।

- (2) वह फीस जो अनुक्रिति दिए जाने या स्वीतृत निए जाने के लिए सदत की जाएगी एक ही स्टैणन पर निनी एक गोला 1,200 रपए होगी और अनिस्कित अनुक्रित के लिए 600 र होगी।
- (3) वह प्रतिभृति निधेण प्रिसे सस्तुर १८० पर अन्धिति ६० जाएकी या नवीष्ट्रत की भागमी 500 मध्ये नवी । र 1500 रुपए वी बैक गारटी होगी। उपने निक्षेप पर १६ रिपाल नहीं सामा।
- (4) प्रत्येक स्टेंगन आर रेन त िए निकास में एक धन होगी जो सक्षम प्राधिकार। द्वारा सर्भाष्ट्रम पर स्वार्टरत का आर
- (4) प्रत्येक स्टेशन और रख के लिए अभिक्ता कि संस्था वट होगी जो सबम प्राधिककी हाथ अवधायि के जीए।
- 4 अनुत्राप्ति का दिया जाना—() प्राप्तप्ति व । ना प्राप्तिः सक्षम प्राधिकारी को प्राप्ति में किया कार्या
- (2) सम्म प्राधिकारी शानित प्राप्त हार पर पैकी जरू पढ़ि को है, करने के पश्चान् जैसी वह प्राप्तण्यक समा। प्रवेदर कारल यात्री मेवा प्राधिकता के रूप में कार्य करने के पिए प्राधिकता करने गए। प्रमुज्ञानि देगा, सा पैसे कारणों से जा। कखबढ़ि कि जायन प्रकार प्रदेशी से सकता करी।।
- (3) यदि अविदेश ने उसनारार साम साम र वर्ध प्राप्त में निर्माणिता मक्षम प्राधिकार। उसमें भी स्वाप्त करने भी अिल्मीन प्रस्तृत करने की अपेक्षा करना र नियम (1) न व्याप्तियम (1) म विनिद्दिष्ट फीस जमा कर दी है और नियम नक उप-नियम (3) त अहन प्यतिभित्त देता है तो अपेक्ष करा प्राप्त भी से अन्दर्शन को जाए।
- (4) यदि श्रावेदक उप नियम (3) र पिनिदार श्रवाधार भानर फीस जमा करने और प्रतिभिन्न प्रमान करने म यगपन रत्ना ह ता उसका श्रावेदन, रह कर दिया गया समाभा न गेगा
- 5. शर्ते जिन ५२ अनन्नित मज्य की जा सन्ती नियम । क अर्थान व गयी अनुनित्ति निम्निलिखन शतः के यधीन सनी अर्थन ——
 - (1) अनुक्राप्त दिये जान की तारीख सालान वा की प्रविधिय लिए विधिमान्य हैगी
 - (2) ग्रनज्ञिष्त हस्तातरणीय नह हर्गा
 - (3) श्रभिक्तां दिनाय श्रेणं से भिन्न ोण्यों ने निए प्रारक्षण प्राप्त करने के लिए सेवा प्रमार व रूप स , इ रूपा प्रति यात्री ओर दिनीय श्रेणों के निए रूपरे प्रत यात्री से ग्राप्त प्रभारत हों। वरेगा 'उन उन्हों हों। से ग्राप्त के निए अरक्षण एक अप्रति हों। रूप पर प्रप्त किया जाना बहा सवा एकार दिनीय हेंगा। रूपित श्रेणिया की द्वार के प्रस्त प्रभार दिनीय हेंगा। रूपित श्रोणिया की द्वार के प्रस्ता प्रभार दिनीय होंगा के प्रस्त प्रभार किया जाना कहा स्थार प्रभार के निए प्रभाव प्रभार दिना। रूपा प्रभार प्रभार के निए उ रूपा संक्षीय नहा होंग
 - (अ) स्रभिकत्ति कारकार स्वयं किया या त्या एक का किए सब्दम प्राधिकार द्वारों ब्रत्मादित प्रपन तमकार। यास से करेगा
 - (5) प्रमुक्तप्ति और सेवा प्रभार कप्रकार के सदृष्य स्थान पर प्रविश्ति किये जायेगे

- (6) अभिवर्ता टिकटो का करीय आरक्षण प्रभार और सेवा प्रभारों के लिए ग्राह्य में प्राप्त जिल्ला अने वर्णते हुएपथक-पृथक कीर्दिया
- (७) अभिना एर प्रिन्टर रखेरा जिस्स उसने समीमास्या जनाम ति अपा अर पन उसे १ परो
- (8) अभितर्ता टियटे करीयो और आरक्षण प्राप्त करने व लिए आने कर्मवारियों में से ए येक को एव पहचान पत्न येगा जिस पर कमवारी की सक्षम प्राधित से द्वारा प्रतिनस्ताक्षरित पोटालगी तोगा
- () ग्रेफियर्ना निकट शरी । ओा प्रारक्षाः प्राप्त करने का काथ ग्रेपः। ग्राप्त प्राप्ति निनेत्र पर करेगाः। जहा श्रक्षिकता प्राप्त पर श्राप्तः न्द्रपा क श्राप्ति पर यह विशेष करेना हे बहा इस रात दिकार स्पन्न राष्ट्र का ना प्राप्ति पर निर्मातिदेन स्वित्र स्वीत्रा करेगा
- (10) श्राभकर्ता एक रिश्तरर रखना जिसस ग्रहका क नाम বিশ প্ৰে পৰ সংগ্ৰিবিলিক্ষা এক বিশ্বত ন্তৰ্ ভ্ৰেমিক কিছাৰ নীয
- (11) प्रभित्ता या ज्याक स्मज्ञा हा पारक्षण क लिए धार्थना सक् अराव्हण अ प्रदक्ष पत्ती पा की जामि निसम अराजित की जासी। अटप्रवेश पारुप पर अभिकता पा उसका क्रम्यारी जस्माध्य प्रदेश जार । उस पह्मातिन्द के साथ प्रमुख करेगा। अभिवता या सका प्रस्तातिक को स्माप्त स अस्मा प्रमुख करेगा। अभिवता या सका प्रस्तातिक को स्माप्त
- (13) प्रशिष्टा या उपका अर सा का रिश्वित रव परिणय क मीतरे आर रव द्वारपण मिर्शिवय सा 100 मीटर का परी वार्भ रव विकास सार स्टब्स्णा करता का लिएकोई सबाचना नहा करगा,
- (15) सक्षम ६ प्रिकार। या उसर प्रारा पाछित्रच अधिकार। वा स्रीता । बारपार जा राजि । इतरान किसी भा समय क्रमा परिसर स्वति श्रीर तक्षी पहचन देशा आर निरीक्षण प्राराणिक रोमा आवायक सहायता प्रदान करेगा और
- (11) जहाँ बाउन्टर बार्बिशा प्रते खात रहत हा बहा अभिकता पाल्सके करण्यास साज्यासि से प्रता 7 बजे के बीच डिकट राज्यन र सारक्षणांक निर्मावर्णके अध्यक्षिण प्रहणांनहा व परिस
- ('क) अन्यति का निवस्त रहतरण राक्षम प्राधिनारी का सार्वाय रच गरित्यण 1800 आर उन नियमा क किन्नी अन्य उपब्धा पर शितक गर्मा। वा किया फिक्ट खराइत आर आरक्षण पायत करन का आरा नाग उन नियम या किन्त राज्य नियम या विनियमा क अधीन गाता म से किसा का जानवन करने नियम प्राप्ता कराहित म समा नि सा किसी अन्य कारण से निमे सक्षम प्राप्ता वा क्रिक्त म समा नि सा कवा वा शिवी भागमा अनुकृति का निल्बा करन या रा बचन का अविसार होगा

परन्] प्रियम के अधान पार्ट राप्तार्ट तब तक नहीं का जाएगी तब के अभिरोग का राग्ण देशीन में स्रवसर प्रवास नहीं करे दिया ज्या ।

ख। टर निप्रमा र किसी भा भग व निग भारतीय रत अधि नियम ९५० का धारा 17(2) म यथा अधिकथित दण्ड दिया जा सक्या ।

7 अनुप्रति वा नवीकरण ---अभज्ञाप्ति तब तक तीम बग के लिए विकार के जाक्की क्रीप रूपस्य सक्य पर इसी प्रकार कर्ब करण आरब होगी जब तक सक्षम प्राधिकाणे, ऐसे कारणों से है। लेखबद्ध विध जायेंगे किसी सामले में अन्यथा शिनि ज्वत नहीं करे थार नियम ४ के उपत्थ प्राथित के सर्वाकरण का उसी पत्रार के तो होणे जिस प्रकार वे उसका संपर्ध के लिए तार ह

९ पतिस्ति तिथेण पालाघार विति संभावकता गाल की स्थान करने में असफल रहता है आर उस- रंग भएरत रहम लोगत स इकार करना है हो सक्षम प्राध्वित्तरी ने निप्रमा व घणन कोई अन्य कार्रवाई करने के अतिरिक्त, निष्म १ व उपालिस्म (७) व अधीन ज्या की गई प्रतिभति की रकम बरापयोग अस्तिवता द्वारा उसके ग्राहका से लीगी राम को लाटाने के लिए वरेगा।

- । धर्णाः (1) इन नियमो व सर्वान विषय गाः स्थाः । एक्षिणारी के प्रत्येकः ब्राव्य में केन्द्रीय नरकार का प्रधीय होगी
- (2) उल्लियम (1) के श्रधान प्रणाल उस लाल से के जिल्हा वर् श्रादेश, जिसके विश्वद्ध अपीन की जाती है, धर्म कर्ता वासन्तित तिया जाता है, तोस दिन के भीतर की जासी ।
- 10 रेल का दायित्व रल प्रशासन प्रभिकता के िश काप या लाप के कारण आहक को हुई या होता संग्रादित गर्मी गति या नुकरात के लिए यापी नहीं हागा।

[৭ ১১-টা ট [/200'28] য চন বাহু মুখিন

त्रहा]

रन वानी सया ब्रांभक्ता व प्राणित न न न पा न

(निप्रम । इक्रा

- । नाम
- अस्वार का पता
- उ नेमियत (स्थान्यारी फम गा क्यानी :-- वि पम हिता रिजर्म्ही: करण और प्रमाणपत्न और भागीजारी वितस्त कि प्रति श्रीर यदि कपनी है तो रिजर्म्हीकरण प्रमापः तथा सगम श्रमुक्टीद श्रोर सगम ज्ञापन की एक रित स्थाग की जाए।
- 4 स्टेशन और रेल जिसके लिए प्राधिकारण काटि। र ।
- 5 विलीय प्रास्थित (सबसे धितम ब्राप्त र समाष्ट्र के प्रमाणपत्र सप्तक शिया जाए) ।
- ८ करतार परिसर अपना र या जिलागपदे पर र (रामबनगास इस्तावेच सदस्त करे)।
- 7. कारबार परिसर तक जन साधारण धामानी स पहल सकता ह
- s कारबार परिसर म स्थान किया के कारे नारकिए।
- 9 कारवार परिमर में उपलेश भूतिहाए-- उल्लोग देलरह क्राहि
- बारबार परिसर म ग्राहका के लिए उपलब्ध प्रमिवशाल (मीटें) शोचालय, क्रांकि)
- 11 स्या कोई स्वामी/भागीदार निशाक कभी ापण्डि ठहराया गया है यदि हा तो व्यार दीजिए।
- 12. कोई अन्य मुमगत जानकारो ।

में जिम्मा सेता त कि ऊपर वी गई किसी जानगारी के किनीभी चाबत, मिथ्या या सही तही पाए जान की दशा में भा ती गई जनुश्रस्ति रह की जात की बायी होगा।

व्यान

ारीख

अप्रात्ता । तस्य क्षा

प्राम्प 11 प्रनज्ञान

(नियम ५ देखिए)

4

यत् प्रतिकाल मस्स : को ब्राक्षयित रेल यात्रियां की धोर स : रेल के : ...
स्टेंगि पर प्रवस्थित ब्रास्थण प्रिक्त बार्धालय से टिकटे खरीदने, रह्
कराने प्रशिद्याय प्रसिन्नाल बरन और यात्रा स्थिति बराने तथा ब्रास्थण
प्राप्त स्थान प्रक्रियां के ह्याम बाय करने के लिए प्राधिकृत
करन ट्रेन् परि शादी है।

स्रतिक्षां बह स्थाप्य र : (बारनार का पता) परिनर्गक्तिका अनों के स्रबीन रतने हुए करणा;

- (1) प्रतः नित्र जिल्लाने की तारीख ने तीन वर्ष को अवधि के लिए राजधमान्य १ ।
- (11) अनु अन शतानरणीय नही होशी,
- (111) अभिकता हिनोय श्रेणी में शिन्न श्रेणियों के लिए प्रारक्षण प्रान्त करने के लिए सेवा प्रभार के रूप में 15 रूपए प्रति यात्री श्रेर दितीय श्रेणी के लिए 8 रूप ये प्रति यात्री में अधिक प्रभारित नहीं करेगा। किन्तु, जहा एक यात्री सं अधिक के लिए आरक्षण एव ही प्रव्यक्षित पर्वी पर प्राप्त किया जाता ते वहां सेवा प्रभार दितीय श्रेणी से शिन्न श्रेमिया के दशा में पहले यात्री के श्रितिकत प्रत्येक यात्री के लिए 8 रूपए आर दितीय श्रेणी के लिए प्रत्येक यात्री के लिए 5 रूपए आर दितीय श्रेणी के लिए प्रत्येक यात्री के लिए 5 रूपए आर दितीय श्रेणी के लिए प्रत्येक यात्री
- (iv) अभिकृतों कारवार स्वयं करेता या इस प्रयोजन के लिए स्थान प्राधिकारी द्वारा अनुमोदित धराने कर्मचारी के माध्यम संकरेता.
- (v) परणित क्षार मेत्रा प्रभार कारबार के सुदूषय स्थान पर प्रदर्शन किए जायेंगे,
- (v1) अभिकर्ता टिकटें। की खरीद, आरक्षण प्रभार और सेवा प्रभारों के लिए आहका से प्राप्त किए गए धन को दर्णाने हुए पृथक-पथक रसीदें देगा।
- (VII) ग्रभिकता एउ रिजस्टर रखेगा जिसमे प्राके वर्मचारियों के नाम, तिरा आह कोर पने दर्शए जायहे,
- (VIII) अभिकर्ता दिन्द खरीदन स्रोर प्रारक्षण प्राप्त करने के लिए प्राप्त गमचास्मिर, में में प्रत्येक तो एक पर्चानपत्र देगा जिस घर कमचार का संकार प्राधिकार द्वारा प्रतिहस्ताक्षरित कारा को हार्ग,
- (11) अभिनर्ना दिहरे खरीदने या.र आरक्षण प्राप्त करने का कार्य प्रपन ग्राह्क लिखिन निवेदन पर बरेगा। जहा अभिकर्ता का पर पहन मदेण के आधार पर यह कार्य करता है वहां यह रेल दिहट प्रपने ब्राहक की देने से पूर्व उससे एक निविद्य निवेदन अभिप्राप्त करेगा,
- (६) व्यभिकर्ता एक रिजम्टिक रखेगा जिसमे उसके ग्राहको के नाम, लिग, ग्राय, पत, याचा की विशिष्टिया ग्रीर टिकट सख्याक उपदिश्विक किए आयेगे,
- (১) श्रीनकर्ना या उसके कमेचारी द्वारा ब्रारक्षण के लिए प्रार्थना एक श्रारक्षण ग्रह. का अर्थी पर की जाएगी जिसमे ब्रनुझण्ति संख्याक की प्रविध उपविणत की जाएगी। धनाधकी धन्तप पर पनिक्षी या उसका कमेंबारी

हरताक्षर करेगा और यह उसे अपने पत्चानपत्न के साथ प्रस्तुत करेगा । अभिकर्ता या उसका वर्मचारी एक बार में एक से अधिक आपदेशा अरुप अरत्त नहीं बरेगा ।

- (Xit) अभिनती ता उनकी सार में कीई व्यक्ति रेल परिमर ने भीतर योग रेल पारक्षण कार्यालय से 100 मीटर की दूरी के भीतर बुक करने और आरक्षण करने के लिए कीई संयाचना नहीं करेगा.
- (xiii) सक्षम प्राधिकारी या उसक द्वारा प्राधिकृत अधिकारी की ग्रमिकर्ता आरबार की श्रवति के दौरान किसी भी समय ग्रपने परिसर में श्रीर ग्रमिक्तें तक पहुंचने देसा और तिरा-क्षण के लिए सभी श्रावश्यक सहायता श्रदान करेगा, श्रीर
 - (Xiv) जहा काउन्टर चीवीसो घरे खुले रहते हो वहां अभिवतां या उसके कर्मचारी से धर्धरात्रि से श्रातः सास बजे के बीच टिकट खरीदने या श्रारक्षण के लिए काई श्रध्यापेशा प्रहण नहीं की जाएगी।

≹स्युलः :

धाज तारीखः को मेरे हस्तादार धौर मृहा से दी गमी।

हर्दाक्षर

MINISTRY OF TRANSPORT

(Deptt, of Railways)

(Railway Board)

New Delhi, the 5th December, 1985

NOTIFICATION

- S.O. 881(E).—In exercise of the powers conferred by Clause (g) of sub-section (1) of section 47 of the Indian Railways Act, 1890 (9 of 1890) the Central Government hereby makes the following rules, namely:—
 - Short title and commencement:—(1) These rules may be called the Authorisation of Rail Travellers' Service Agents Rules, 1985.
 - (2) They shall come into force on the date of their publication in the Official Gazette.
- 2. Definitions.—In these rules unless the context otherwise requires,—-
 - (a) "agent" means a person authorised to act as a rail travellers' service agent under rule 4 and shall include an employee of such person to whom an identity card under rule 5(viii) has been issued;
 - (b) "licence" means a licence issued under rule 4;
 - (c) "competent authority" means the General Manager of the Zonal Railway or any officer authorised by him to discharge his functions under these rules; and
 - (d) "station" means the area within which the main railway station and the Reservation

Booking Offices pertaining to a railway are situated such as New Delhi and Old Delhi areas together for Northern Railway, Scaldah and Howrah for Lastern and South Eastern Railways, Bombay for Western Central Railways and Madrat for the Southern Railway.

- 3. Conditions for appointment of an agent.—(1) A person who is :—
 - (i) in possession of the latest income tax clearance certificate;
 - (ii) having office and premises properly maintained with adequate convenience and amenities in the city so as to accommodate—the visit of sufficient number of customers; and
 - (iii) not convicted in a criminal case involving moral turpitude;

may apply for issue of a licence under Rule 4 to act as an agent.

- (2) The fees on payment of which the beenee shall be issued or renewed shall be Rs. 1200 and Rs. 600 for any additional licence for a Railway in the same station.
- (3) The security deposit on furnishing of which the licence shall be issued or renewed shall be Rs. 5,000 in cash and Bank Guarantee for Rs. 15,000. There shall be no accrual of interest on the said deposit.
- (4) The number of agents for each station and Railway shall be such as may be determined by the competent authority.
 - 4. Issue of a licence:
- (1) An application for issue of a licence shall be made to the competent authority in Form I (Annexed).
- (2) On receipt of an application, the competent authority after making such inquiry, if any as it may consider necessary, shall order to issue the licence authorising the applicant to act as a rail travellers' service agent or for reasons to be recorded in writing refuse to issue the same.
- (3) If the applicant deposits fee specified in subrule (2) of rule 3 and furnishes security deposit under sub-rule (3) of rule 3 within a period of one month from the date on which the competent authority requires him to deposit fee and furnish security, he shall be issued the licence in Form II (Annexed).
- (4) If an applicant fails to deposit the fee and fur nish the security within the period specified in subrule (3), his application shall be deemed to have been rejected.
- 5. The conditions on which the ficence may be granted :--

The licence issued under rule 4 shall be subject to the following conditions, namely:—

(i) the licence shall be valid for a period three years from the date of its issue;

- (ii) the licence shall not be transferable;
- (iii) the agent shall not charge more than Rs. 15 per passenger as service charges for securing reservation in classes other than second class and Rs. 8 in the second class but in case where the reservation for more than one passenger is secured on the same requisition slip, the service charges shall not exceed Rs. 8 per passenger in excess of the first passenger in the case of classes other than second class and Rs. 5 per passenger for second class;
- (iv) the agent shall conduct the business himself or through his employee approved by the competent authority for this purpose:
- (v) the licence and the service charges shall be displayed at a conspicuous place of business;
- (vi) a receipt showing money received from his client for purchase of tickets, reservation charges and service charges separately shall be issued by the agent:
- (vii) a register showing names, sex, age and address of his employee shall be maintained by the agent;
- (viii) an identity card with a photograph countersigned by the competent authority for purchase of tickets and securing reservation shall be issued by the agent to each of his employees;
- (ix) the purchase of tickets and securing of reservation by the agent shall be on a written request from his client. In case the agent acts on a telephone call, a written request shall be obtained by him from the client before delivering the railway ticket to his client;
- (x) a register indicating the name, sex, age, address and journey particulars tegether with ticket number of his clients shall be maintained by the agent;
- (xi) a request for reservation by the agent or his employee shall be made on a reservation requisition form indicating the licence number and its validity period. The requisition form shall be signed by the agent or his employee and shall be presented with his identity card. Not more than one requisition form shall be presented by the agent or his employee at a time;
- (xii) there shall be no canvassing for booking and reservation by the agent or any person on his behalf within the railway premises and within the distance of 100 metres from the railway reservation office;

- (xiii) the competent authority or an officer authorised by him shall be allowed access to the premises and records any time during the business hours by the agents who shall render all necessary assistance for inspection; and
- (xiv) no requisition for the purchase of tickets or reservations where round-the-clock counters are functioning shall be entertained from the agent or his employee between the hours of midnight and 7 A.M.
- 6. (a) Suspension|Cancellation of the Licence.—Without prejudice to any other previsions under the Indian Railways Act, 1890 and these rules the competent authority shall have the right to suspend or cancel at any time the licence for violation of or for ceasing to fulfil any of the conditions under these rules or any other rule or regulation applicable with regard to purchase of ticket and securing reservation or for any other reason which the competent authority deems to be expedient in the public interest;

Provided that no action under this rule shall be taken unless an opportunity to show cause is given to the agent.

- (b) Any breach of these rules shall also be liable to attract punishment as laid down in section 47(2) of the Indian Railways Act, 1890.
- 7. Renewal of licence.—A licence shall, unless the competent authority for reasons to be recorded in writing otherwise decides in any case be renewable for three years and shall be so renewable from time to time and the provisions of rule 4 shall apply to the renewal of the licence as they apply to the grant thereof.
- 8. Utilisation of Security Deposit.—Where the agent fails to perform the service for his client and refuses to refund the amount charged by him, the competent authority shall in addition to any other action taken under these rules, utilise the amount of security deposited under sub-rule (3) of rule 3 for refund of the amount charged by the agent from his clients.
- 9. Appeal.—(1) An appeal shall lie against every order of the competent authority made under these rules to the Central Government.
- (2) The appeal under sub-rule (1) shall be preferred within thirty days from the date on which the order appealed against is communicated to the appellant.
- 10. Liability of Railways.—The Railway administration shall not be liable for any loss or damage suffered or likely to be suffered by a client on account of any act or omission of the agent.

[No. 85-TGI/200/28' A. N. WANCHOO, Secy., Railway Board.

FORM I

APPLICATION FOR AUTHORISATION OF RAIL TRAVELLERS' SERVICE AGENT

(See Rule 4)

- 1. Name-
- 2. Business Address:
- Status (whether proprietors) is inflor company)—if time copy of registration certificate and partnership deel and it company, copy of registration certificate and memorandum of association and articles of association to be attached.
- Station and Railway for which authorisation is sought.
- 5. Financial status (latest mome tax elemance certificate to be atached).
- Whether business premises are owned or on hire/lease (supporting documents to be attached).
- 7. Whether business prennics at reastly accessible for the public.
- 8 Details of accommodation in the business premises with dimensions
- 9 Amonities available at the bicoess premises— Telephone Telex etc.
- 10. Facilities available for the cheats at the business premises (seats toilet erc)
- Whether any proprietor; Parmer Director has ever been convicted? If so, give the details thereof.
- 12 Any other relevant information. -

I undertake that in the event of any information given above being found to be take or in accurate in any respect, the licence issued shall be liable to be cancelled.

Place:

Signature et applicant.

FORM II

LICENCE

(See Rule 5)

No.

 rail travellers from the reservation booking office located at station on Railway.

The agent shall conduct the business from (address of the business) subject to the following conditions .--

- (i) the heence shall be valid for a period of three years from the date of its issue;
- (ii) the licence shall not be transforable;
- (iii) the agent shall not charge more than Rs. 15 per passenger as service charges for securing reservation in classes other than Hnd class and Rs. 8 in the Hnd class but in case where the reservation for more than one passenger is secured on the same requisition slip, the service charges shall not exceed Rs. 8 per passenger in excess of the first passenger in the case of classes other than Hnd class and Rs. 5 per passenger for Hnd class.
- (iv) the agent shall conduct the business himself or through his employee approved by the competent authority for this purpose;
- (v) the hoence and the service charges shall be displayed at a conspicuous place of business;
- (vi) A receipt showing money received from his client for purchase of tickets, reservation charges and service charges separately shall be issued by the agent;
- (vii) a register showing names, sex, age and address of his employee shall be maintained by the agent;
- (viii) an identity card with a photograph countersigned by the competent authority for purchase of tockets and scenning reservation shall be issued by the agent to each of his employees.
- (ix) the purchase of ticket and scenning of reservation by the agent shall be on a written request from his client. In case the agent acts on a telephone call, a written request shall be obtained by him from the client, before deliving the railway field to his client:
- (x) a register indicating the name, age, sex, address and journey particulars together with ticket number of his client shall be maintained by the agent;
- (xi) a request for reservation by the agent or his employee shill be made on a reservation requisition form indicating the licence number and its validity period. The requisition form shall be signed by the agent or his employee and shall be presented with his identity card. Not more than one requisition form shall be presented by the agent or his employee at a time:

- (xii) there shall be no canvassing for booking and reservation by the agent or any person on his behalf within the railway premises and within the distance of 100 metres from the railway reservation office;
- (xiii) the competent authority or an officer authorised by him shall be allowed access to the premises and records any time during the business hours by the Agent who shall render all necessary assistance for inspection; and

(xiv)	no requisition for the purchase of tickets or
	reservations where round the clock counters
	are functioning shall be entrained from the
	Agent or his employee between the hours
	of midnight and 7 A.M.

Give	n under	my	hand	and	seal	Qil	this-
Place:							
		day	of		arterania dela		198
		Sign	ature-			-	t manufacturism on minister - completentification

	•	